

रविवार 28 अप्रैल, 2024

विषय — मृत्यु के बाद की प्रक्रिया

स्वर्ण पाठ: प्रकाशित वाक्य 22: 14

"धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से हो कर नगर में प्रवेश करेंगे।"

उत्तरदायी अध्ययन: यूहन्ना 5: 24-26, 28, 29

- ²⁴ मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।
- ²⁵ मैं तुम से सच सच कहता हूं, वह समय आता है, और अब है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएंगे।
- ²⁶ क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे।
- ²⁸ इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे।
- ²⁹ जिन्होंने ने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने ने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 25: 1, 6-8

- ¹ हेयहोवा, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे सराहूंगा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा; क्योंकि तू ने आश्चर्यकर्म किए हैं, तू ने प्राचीनकाल से पूरी सच्चाई के साथ युक्तियां की हैं।
- ⁶ सेनाओं का यहोवा इसी पर्वत पर सब देशों के लोगों के लिये ऐसी जेवनार करेगा जिस में भांति भांति का चिकना भोजन और निथरा हुआ दाखमधु होगा; उत्तम से उत्तम चिकना भोजन और बहुत ही निथरा हुआ दाखमधु होगा।
- ⁷ और जो पर्दा सब देशों के लोगों पर पड़ा है, जो घूंघट सब अन्यजातियों पर लटका हुआ है, उसे वह इसी पर्वत पर नाश करेगा।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 8 वह मृत्यु को सदा के लिये नाश करेगा, और प्रभु यहोवा सभी के मुख पर से आंसू पोंछ डालेगा, और अपनी प्रजा की नामधराई सारी पृथ्वी पर से दूर करेगा; क्योंकि यहोवा ने ऐसा कहा है॥

2. यूहन्ना 11: 1, 4 (से 4th), 7, 11 (हमारा), 15, 17, 21-27, 32-34 (से?), 38-44

- 1 मरियम और उस की बहिन मारथा के गांव बैतनिय्याह का लाजर नाम एक मनुष्य बीमार था।
4 यह सुनकर यीशु ने कहा, यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।
7 फिर इस के बाद उस ने चेलों से कहा, कि आओ, हम फिर यहूदिया को चलें।
11 कि हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूं।
15 और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूं कि मैं वहां न था जिस से तुम विश्वास करो, परन्तु अब आओ, हम उसके पास चलें।
17 सो यीशु को आकर यह मालूम हुआ कि उसे कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं।
21 मारथा ने यीशु से कहा, हे प्रभु, यदि तू यहां होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता।
22 और अब भी मैं जानती हूं, कि जो कुछ तू परमेश्वर से मांगेगा, परमेश्वर तुझे देगा।
23 यीशु ने उस से कहा, तेरा भाई जी उठेगा।
24 मारथा ने उस से कहा, मैं जानती हूं, कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।
25 यीशु ने उस से कहा, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा।
26 और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा, क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?
27 उस ने उस से कहा, हां हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूं, कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था, वह तू ही है।
32 जब मरियम वहां पहुंची जहां यीशु था, तो उसे देखते ही उसके पांवों पर गिर के कहा, हे प्रभु, यदि तू यहां होता तो मेरा भाई न मरता।
33 जब यीशु ने उस को और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास हुआ।
34 जब यीशु ने उस को और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास हुआ, और घबरा कर कहा, तुम ने उसे कहां रखा है?
38 यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर कब्र पर आया, वह एक गुफा थी, और एक पत्थर उस पर धरा था।
39 यीशु ने कहा; पत्थर को उठाओ: उस मरे हुए की बहिन मारथा उस से कहने लगी, हे प्रभु, उस में से अब तो दुर्गंध आती है क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए।

- 40 यीशु ने उस से कहा, क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।
- 41 तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया, फिर यीशु ने आंखें उठाकर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने मेरी सुन ली है।
- 42 और मैं जानता था, कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उन के कारण मैं ने यह कहा, जिस से कि वे विश्वास करें, कि तू ने मुझे भेजा है।
- 43 यह कहकर उस ने बड़े शब्द से पुकारा, कि हे लाजर, निकल आ।
- 44 जो मर गया था, वह कफन से हाथ पांव बन्धे हुए निकल आया और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ तें यीशु ने उन से कहा, उसे खोलकर जाने दो॥

3. यूहन्ना 12: 35, 46

- 35 यह मनुष्य का पुत्र कौन है? यीशु ने उन से कहा, ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच में है, जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो; ऐसा न हो कि अन्धकार तुम्हें आ घेरे; जो अन्धकार में चलता है वह नहीं जानता कि किधर जाता है।
- 46 मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे।

4. रोमियो 13: 11 (अब यह है)-14

- 11 ... इसलिये कि अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है।
- 12 रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है; इसलिये हम अन्धकार के कामों को तज कर ज्योति के हथियार बान्ध लें।
- 13 जैसा दिन को सोहता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें; न कि लीला क्रीड़ा, और पियक्कड़पन, न व्यभिचार, और लुचपन में, और न झगड़े और डाह में।
- 14 वरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर की अभिलाशाओं को पूरा करने का उपाय न करो।

5. प्रकाशित वाक्य 1: 1 (सं;)

- 1 यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य जो उसे परमेश्वर ने इसलिये दिया, कि अपने दासों को वे बातें, जिन का शीघ्र होना अवश्य है, दिखाए।

6. प्रकाशित वाक्य 2: 7

- 7 जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है: जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूंगा॥

7. प्रकाशित वाक्य 3: 19-21

- 19 मैं जिन जिन से प्रीति रखता हूँ, उन सब को उलाहना और ताड़ना देता हूँ, इसलिये सरगर्म हो, और मन फिरा।
20 देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुन कर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आ कर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।
21 जो जय पाए, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा मैं भी जय पा कर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया।

8. 1 कुरिन्थियों 15: 26, 55-58

- 26 सब से अन्तिम बैरी जो नाश किया जाएगा वह मृत्यु है।
55 हे मृत्यु तेरी जय कहाँ रही?
56 हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ रहा? मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है।
57 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।
58 सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 246: 27 (ज़िंदगी)-28 (से 2nd.)

जीवन शाश्वत है। हमें इसका पता लगाना चाहिए, और इसके बाद प्रदर्शन शुरू करना चाहिए। जीवन और अच्छाई अमर है।

2. 303: 28-30

आध्यात्मिक मनुष्य ईश्वर की छवि या विचार है, एक ऐसा विचार जो न तो खो सकता है और न ही अपने ईश्वरीय सिद्धांत से अलग हो सकता है।

3. 203: 31-2

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

ईश्वर, ईश्वरीय भलाई, किसी व्यक्ति को अनन्त जीवन देने के लिए उसे नहीं मारता, क्योंकि ईश्वर ही मनुष्य का जीवन है। ईश्वर एक साथ अस्तित्व का केंद्र और परिधि है। वह बुराई है जो मरती है; अच्छा मरता नहीं।

4. 324: 32-7

यीशु ने वास्तव में कहा, "जो कोई है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा" मतलब, वह जो जीवन के सच्चे विचार को मानता है वह मृत्यु में अपना विश्वास खो देता है। जिसके पास भलाई का सच्चा विचार है वह बुराई के सभी अर्थों को खो देता है, और इस कारण से आत्मा की शाश्वत वास्तविकताओं में प्रवेश किया जा रहा है। ऐसा मनुष्य जीवन में रहता है, - वह जीवन जो शरीर को सहायक जीवन के लिए नहीं बल्कि सत्य के लिए प्राप्त होता है, अपने स्वयं के अमर विचार को प्रकट करता है।

5. 90: 24-32

स्वयं के लिए प्रवेश यह है कि मनुष्य ईश्वर की अपनी समानता है जो मनुष्य को अनंत विचार के लिए स्वतंत्र करता है। यह विश्वास मृत्यु पर दरवाजा बंद कर देता है, और इसे अमरता की ओर विस्तृत करता है। आत्मा की समझ और मान्यता अंत में आनी चाहिए, और हम दिव्य सिद्धांत की आशंका के माध्यम से होने के रहस्यों को सुलझाने में हमारे समय में सुधार कर सकते हैं। वर्तमान में हम जानते हैं कि मनुष्य क्या नहीं है, लेकिन हम निश्चित रूप से यह जानते हैं जब मनुष्य भगवान को दर्शाता है।

6. 75: 12-20

यीशु ने लाजर के बारे में कहा: "कि हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूं।" यीशु ने लाजर को इस समझ के साथ बहाल किया कि लाजर की मृत्यु कभी नहीं हुई थी, न कि इस बात से कि उसका शरीर मर गया था और फिर दोबारा जीवित हो गया था। अगर यीशु का मानना था कि लाजर उसके शरीर में रहता या मर गया है, तो मास्टर विश्वास के उसी तल पर खड़े होते थे, जो शरीर को दफनाते थे, और वे इसे पुनर्जीवित नहीं कर सकते थे।

7. 302: 3-13, 19-24

भौतिक शरीर और मन लौकिक हैं, लेकिन वास्तविक मनुष्य आध्यात्मिक और शाश्वत है। असली आदमी की पहचान नहीं खोई है, लेकिन इस स्पष्टीकरण के माध्यम से पाया जाता है।; इसके लिए अस्तित्व और सभी पहचान के प्रति सचेत अविभाजित है और अपरिवर्तित रहता है। जब भगवान सब और अनंत काल के हैं, तब यह असंभव है कि मनुष्य को वास्तविक रूप से खोना चाहिए। यह धारणा कि मन पदार्थ में है, और तथाकथित सुख और पीड़ा, जन्म, पाप, बीमारी, और पदार्थ की मृत्यु, वास्तविक हैं, एक नश्वर विश्वास है; और यह विश्वास वह सब है जो कभी खो जाएगा।

मनुष्य के पूर्ण, यहाँ तक कि पिता के रूप में भी पूर्ण होने का विज्ञान बताता है, क्योंकि आध्यात्मिक मनुष्य का आत्मा या मन, ईश्वर है, जो सभी का दिव्य सिद्धांत है, और क्योंकि यह वास्तविक व्यक्ति आत्मा के बजाय आत्मा के नियम द्वारा शासित है, न कि पदार्थ के तथाकथित नियमों द्वारा।

8. 427: 13-21

मृत्यु, लेकिन सपने का एक और चरण है कि अस्तित्व भौतिक हो सकता है। विज्ञान में मनुष्य के अस्तित्व के सामंजस्य में कुछ भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता है और न ही समाप्त कर सकता है। आदमी बाद में वैसा ही है जैसा हड्डी टूटने या सिर कटने से पहले होता है। यदि मनुष्य को कभी भी मृत्यु पर विजय प्राप्त नहीं करनी है, तो शास्त्र क्यों कहते हैं, "सब से अन्तिम बैरी जो नाश किया जाएगा वह मृत्यु है"? वचन की अवधि दर्शाती है कि हम पाप पर विजय पाने के अनुपात में मृत्यु पर विजय प्राप्त करेंगे।

9. 46: 20-24

यीशु की मृत्यु के बाद लगने वाली शारीरिक स्थिति सभी भौतिक स्थितियों से ऊपर होने के कारण उसकी मृत्यु हो गई, और इस अतिशयोक्ति ने उसके उदगम की व्याख्या की, और कब्र से परे एक परिवीक्षाधीन और प्रगतिशील राज्य का खुलासा किया।

10. 290: 16-18 अगला पृष्ठ

यदि मृत्यु नामक परिवर्तन पाप, बीमारी और मृत्यु में विश्वास को नष्ट कर देता है, तो विघटन के क्षण में खुशी जीत जाएगी, और हमेशा के लिए स्थायी हो जाएगी; लेकिन यह ऐसा नहीं है। पूर्णता से ही पूर्णता प्राप्त होती है। जो लोग अधर्मी हैं वे अभी भी अधर्मी होंगे, जब तक कि दिव्य विज्ञान में क्राइस्ट, सत्य, सभी अज्ञान और पाप को हटा नहीं देते हैं।

वह पाप और त्रुटि जो हमें मृत्यु के तुरंत बाद प्राप्त होती है, उस क्षण में समाप्त नहीं होती है, लेकिन इन त्रुटियों की मृत्यु तक होती है। पूर्ण आध्यात्मिक होने के लिए, मनुष्य को पाप रहित होना चाहिए, और वह पूर्णता तक पहुँचने पर ही इस प्रकार बनता है। हत्यारे, हालांकि कृत्य में मारे जाते हैं, जिससे पाप का त्याग नहीं होता। वह यह मानने के लिए अधिक आध्यात्मिक नहीं है कि उसका शरीर मर गया और यह सीख कर कि उसका क्रूर मन नहीं मर गया। उनके विचार तब तक शुद्ध नहीं होते जब तक कि बुराई अच्छे से निरस्त्र नहीं होती। उसका शरीर उसके मन के समान भौतिक है, और इसके विपरीत।

अधर्म को छोड़ते समय जिन पापों को क्षमा किया जाता है, वह खुशी पाप के बीच में वास्तविक हो सकती है, कि शरीर की तथाकथित मौत पाप से मुक्त हो जाती है, और यह कि भगवान का क्षमा याचना है लेकिन पाप का

विनाश, - ये गंभीर गलतियाँ हैं। हम जानते हैं कि सब बदल जाएगा "एक पल में," जब आखिरी तुरही ध्वनि होगी; लेकिन ज्ञान का यह अंतिम निमंत्रण तब तक नहीं आ सकता जब तक कि ईसाई चरित्र की वृद्धि में प्रत्येक कम आमंत्रण के लिए नश्वर न हो गए हों। मनुष्यों को यह कल्पना करने की आवश्यकता नहीं है कि मृत्यु के अनुभव में विश्वास उन्हें महिमा प्रदान करेगा।

सार्वभौमिक मुक्ति प्रगति और परिवीक्षा पर टिकी हुई है, और उनके बिना अप्राप्य है। स्वर्ग एक स्थानीयता नहीं है, बल्कि मन की एक दिव्य स्थिति है जिसमें मन की सभी अभिव्यक्तियाँ सामंजस्यपूर्ण और अमर हैं, क्योंकि पाप नहीं है और मनुष्य अपने स्वयं के धार्मिकता नहीं पा रहा है, लेकिन "प्रभु के मन", "जैसा कि शास्त्र कहता।

11. 254: 10-15

जब हम धैर्यपूर्वक ईश्वर की प्रतीक्षा करते हैं और सत्य की तलाश करते हैं, तो वह हमारे मार्ग का निर्देशन करता है। अपूर्ण नश्वर धीरे-धीरे आध्यात्मिक पूर्णता के चरम को समझ लेते हैं; लेकिन दुर्दशा शुरू करने और होने की बड़ी समस्या को प्रदर्शित करने के संघर्ष को जारी रखने के लिए, बहुत कुछ कर रहा है।

12. 426: 16-22

जब यह जान लिया जाता है कि बीमारी जीवन को नष्ट नहीं कर सकती है, और मृत्यु से पाप या बीमारी से मृत्यु को बचाया नहीं जाता है, तो यह समझ जीवन के नएपन में तब्दील हो जाएगी। यह या तो मरने या कब्र से डरने की इच्छा में महारत हासिल करेगा, और इस तरह नश्वर अस्तित्व को नष्ट करने वाले महान भय को नष्ट कर देगा।

13. 428: 3 केवल, 6-14

जीवन वास्तविक है, और मृत्यु भ्रम है। ... इस सर्वोच्च क्षण में मनुष्य का विशेषाधिकार हमारे मास्टर के शब्दों को साबित करना है: "कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा।" झूठे न्यासों और भौतिक साक्ष्यों के बारे में विचार करने के लिए ताकि आध्यात्मिक तथ्य सामने आ सकें — यह महान प्राप्ति है जिसके माध्यम से हम असत्य को मिटा देंगे और सत्य को स्थान देंगे। इस प्रकार हम मंदिर, या देह को सच में स्थापित कर सकते हैं, "जिसका निर्माता और निर्माता भगवान है।"

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6